आओ खाना खाने आओ

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Book Title : Aao Khana Khane Aao (Come and Eat With Us)
Cover Page picture : Crane and Fox
Published under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

सीरीज़ की भूमिका 5
आओ खाना खाने आओ 7
1 सारस और लोमड़ी की कहानी 9
2 भूखा मकड़ा और कछुआ 14
3 तुमने बुलाया है 23
4 कछुआ और बबून 33
5 टिड्डा और मेंढक 38

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुॅचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहॉ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

आओ खाना खाने आओ

आदमियों के साथ साथ जानवर भी बहुत बार सामाजिक जीव होते हैं। वे एक दूसरे से बात करते हैं, साथ साथ घूमते हैं, एक दूसरे के सुख दुख में काम आते हैं। एक दूसरे को अपने घर खाना खाने के लिये बुलाते हैं और एक दूसरे के घर खाना खाने के लिये भी जाते हैं।

और यह स्वाभाविक है कि जब हम किसी को बुलाते हैं तो हम उसे चाहे ऐसे ही मिलने के लिये बुलायें या फिर खाना खाने के लिये बुलायें हम उसका प्रेम से स्वागत करते हैं उसको प्रेम से खिलाते पिलाते हैं और उसको इस तरह से विदा करते हैं कि वह हमारे घर से हॅसी खुशी सन्तुष्ट हो कर जाये।

यहॉ हम तुम्हारे लिये कुछ ऐसी लोक कथाऐं दे रहे हैं जिनमें कुछ जानवरों ने अपने दोस्त जानवरों को खाना खाने के लिये बुलाया है पर उन्होंने उनकी इस तरह से खातिरदारी नहीं की है जैसी कि उनको उनकी करनी चाहिये थी। इन कथाओं को पढ़ो और देखो कि उन्होंने अपने उन दोस्तों के साथ कैसा व्यवहार किया। क्या उनको उनके साथ ऐसा व्यवहार करना चाहिये था?

तो लो पढ़ो ये इतनी सारी लोक कथाऐं मेहमान दोस्तों के साथ व्यवहार की.... ये सारी लोक कथाऍं हमने तुम्हारे लिये बहुत सारी जगहों से खास तौर पर इकट्ठी की हैं।

1 सारस और लोमड़ी की कहानी[1]

आओ खाना खाने आओ की कहानियों के इस संग्रह में यह पहली कहानी हम सारस और लोमड़ी की दे रहे हैं। यह कहानी बहुत बचपन में ही बच्चों को सुनायी जाती है और इसलिये इस संग्रह में इसको पहली कहानी की जगह रखा गया है। सारस और लोमड़ी की कहानी बहुत पुरानी कहानी है पर यह है बड़ी मजेदार।

मैं आज भी अपने पोती पोतों को यह कहानी इसलिये सुनाती हूँ ताकि वे घर में बुलाये गये मेहमान का दिल से स्वागत करें और उसकी सुख सुविधा का पूरा ख्याल रखें।

एक बार की बात है कि एक नदी के किनारे एक सारस सुख से रहता था। जब तब वह नदी में घुस जाता और दो चार मछलियाँ खा कर बाहर आ जाता और देर तक धूप में बैठा धूप सेकता रहता।

उसी नदी पर और भी जानवर पानी पीने आया करते थे। उन जानवरों में एक लोमड़ी भी थी। बच्चों लोमड़ी बहुत ही चालाक जानवर होता है। पर धीरे धीरे किसी तरह से सारस और लोमड़ी की दोस्ती हो गयी।

एक दिन लोमड़ी ने सोचा कि अपनी दोस्ती की खुशी में सारस और वह एक साथ खाना खायें तो कितना अच्छा रहे सो उसने

[1] This story was told by my father in my childhood.

सारस से कहा — "सारस भाई एक दिन हमारे घर खाना खाने आओ न।"

सारस यह सुन कर बहुत खुश हुआ। वह बोला — "क्यों नहीं लोमड़ी बहिन। तुम्हारे साथ खाना खा कर तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा। बोलो मैं कब आऊँ?"

लोमड़ी बोली "कल ही आ जाओ न सारस भाई।"

सारस बोला "ठीक है मैं कल ही आ जाता हूँ। कल मुझे और कोई काम नहीं है।"

अगले दिन सारस नदी में देर तक नहाया। उसने आज मछलियाँ भी नहीं खायीं क्योंकि आज तो उसको लोमड़ी बहिन के घर खाना खाने जाना था। साफ सुथरा और ताजा हो कर सारस लोमड़ी के घर चल दिया।

लोमड़ी तो सारस का इन्तजार ही कर रही थी। वह सारस को देखते ही बहुत खुश हुई और उसके पंखों पर हाथ रख कर उसे अन्दर ले गयी।

लोमड़ी ने खाना पहले से ही एक बड़ी सी पत्थर की मेज पर सजा रखा था ताकि सारस को इन्तजार न करना पड़े। सारस को भी भूख लगी थी सो वे दोनों खाना खाने बैठे।

एक सुन्दर से केले के पत्ते पर बहुत सारा हलवा रखा था। लोमड़ी बोली — "आओ सारस भाई हलवा खाओ। हलवा अभी भी गरम है मैंने अभी अभी बनाया है।"

हलवा देखने में वाकई बहुत सुन्दर लग रहा था। उसको देखते ही सारस के मुँह में पानी आने लगा।

तो बच्चो सारस की चोंच तो बहुत लम्बी होती है और हलवा था गरम सो जैसे ही सारस ने हलवा खाया तो पहली बात तो उसकी चोंच जल गयी। दूसरे उसकी चोंच में बहुत ही कम हलवा आया।

अब हलवा था तो बहुत बढ़िया परन्तु सारस अपनी लम्बी चोंच की वजह से उसे बहुत ही धीरे धीरे खा पा रहा था।

उधर लोमड़ी ने जल्दी जल्दी दो चार बार अपनी जीभ उस केले के पत्ते पर इधर उधर घुमायी और वह सारा हलवा जल्दी से चट कर गयी। सारस बेचारा हलवा ठीक से चख भी नहीं पाया था कि वह खत्म भी हो गया।

कुछ देर बाद सारस लोमड़ी को धन्यवाद दे कर दुखी हो कर अपने घर वापस आ गया। सारस और लोमड़ी फिर वहीं नदी के किनारे मिलते रहे परन्तु सारस लोमड़ी की दावत को नहीं भूला।

कुछ दिनों बाद सारस बोला — "लोमड़ी बहिन एक दिन तुम को भी मेरे हाथ का खाना खाना चाहिये। देखो कि मैं कितना स्वादिष्ट खाना बनाता हूँ। सो तुम भी आओ न एक दिन मेरे घर खाना खाने के लिये।"

लोमड़ी यह सुन कर बहुत खुश हुई और बोली — "सारस भाई यह तो मेरे लिए बहुत ही खुशी की बात होगी। बोलो कब आऊँ?"

सारस कुछ सोचते हुए बोला — "अगले इतवार को तो मुझे कुछ काम है क्यों न हम सोमवार की शाम को मिलें।"

लोमड़ी बोली — "ठीक है तो हम लोग अगले सोमवार की शाम को मिलते हैं।" और लोमड़ी खुशी खुशी घर चली गयी।

अगला सोमवार आया। शाम को लोमड़ी ने अपनी सबसे अच्छी पीली स्कर्ट निकाली और उसके ऊपर काला रेशम का ब्लाउज पहना। एक बड़ा सा टोप लगाया। अभी कुछ धूप थी तो काला चश्मा लगाया और पालिश किये हुए चमकदार जूते पहने।

शीशे में अपना चेहरा देखा और सज धज कर सारस के घर चल दी खाना खाने के लिये। चलते समय वह अपनी छड़ी लेना नहीं भूली।

सारस ने भी लोमड़ी के लिए खाने की पूरी तैयारी कर रखी थी। उसने तंग गरदन वाला यानी सुराही जैसा एक बरतन फर्श पर रखा हुआ था।

सारस ने लोमड़ी का प्रेम से स्वागत किया और दोनों उस सुराही के पास आ कर बैठ गये। सारस ने लोमड़ी के आने की खुशी में आज मीठे चावल बनाये थे और उनकी सोंधी सोंधी खुशबू लोमड़ी के नथुनों तक पहुँच रही थी। लोमड़ी उन चावलों को खाने के लिए बेचैन हो रही थी।

सारस ने लोमड़ी से कहा — "आओ बहिन मेरा खाना बिल्कुल तैयार है लो खाना शुरू करो।"

लोमड़ी धीरे से अपना मुँह उस सुराही जैसे बरतन के पास ले गयी और उसमें से चावल खाने की कोशिश की परन्तु बहुत लम्बी जीभ निकालने के बाद भी उसकी जीभ उस सुराही में रखे चावलों तक न पहुँच सकी।

सारस ने अपनी लम्बी चोंच उस बरतन में डाली और थोड़े थोड़े चावल धीरे धीरे खाता रहा। लोमड़ी बैठी बैठी सारस को वह बढ़िया खुशबूदार चावल खाते देखती रही।

सारस का जब पेट भर गया तो बोला — "मैंने तो आज बहुत दिनों बाद बहुत अच्छा खाना खाया सो बहुत ही ज़्यादा खाना खाया गया। अब मुझे तो नींद भी आने लगी है।"

और यह कह कर सारस वहीं फ़र्श पर लेट गया और जल्दी ही खर्राटे मारने लगा। लोमड़ी बेचारी अपना सा मुँह ले कर भूखी अपने घर वापस चली आयी।

उस दिन से आज तक लोमड़ी और सारस की बोलचाल बन्द है।

सारस अभी भी वहीं धूप सेकता है लोमड़ी अभी भी वहीं पानी पीने आती है परन्तु दोनों एक दूसरे को नमस्ते तक नहीं करते बोलना तो दूर।

2 भूखा मकड़ा और कछुआ[2]

खाने पर बुलाने की यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के घाना देश की लोक कथाओं से ली गयी है। यह अनन्सी मकड़े की कहानी है।

मकड़े को बहुत भूख लगी थी। असल में तो वह मकड़ा हमेशा ही बहुत भूखा रहता था पर आज वह कुछ ज़रा ज़्यादा ही भूखा था। अशान्ती[3] देश में हर आदमी उसकी भूख को जानता था।

पर वह हमेशा केवल भूखा ही नहीं रहता था बल्कि वह लालची भी बहुत था। उसको अपने हिस्से से हमेशा ही बहुत ज़्यादा चाहिये था इसलिये भी लोग उस मकड़े से हमेशा ही बचते रहते थे।

एक दिन एक अजनबी उधर आ निकला जहाँ यह मकड़ा रहता था। उस अजनबी का नाम था कछुआ। कछुआ अपने घर से बहुत दूर निकल आया था। वह गरम धूप में सारे दिन चल कर आ रहा था सो वह बहुत थका हुआ था और भूखा भी था।

---

[2] Hungry Spider and the Turtle – a folktale from Ghana, West Africa.
Adapted from the Book "The Cow-Tail Swich and Other West African Stories". By Harold Courlander George Herzog. NY: Henry Holt and Company. 1947. 143 p. Read this book in Hindi translated by Sushma Gupta.

[3] Long before Ghana was known as Gold Coast. Ashanti was a large tribe living there at that time. They ruled the Ashanti Kingdom for long time. It was named after the name of that tribe.

जब मकड़े ने उसको इतना थका हुआ और भूखा देखा तो उसने उसको अपने घर बुला लिया और उसको कुछ खाने को दिया।

हालॉकि यह सब उसको अच्छा नहीं लग रहा था पर अगर वह इस थके हुए यात्री को खाना खिलाने के लिये नहीं बुलाता तो वह कहीं खेतों की तरफ चला जाता और फिर वहॉ के लोगों से उसकी शिकायत कर देता और फिर लोग पीठ पीछे उसकी बुराई करते जो वह नहीं चाहता था।

इसलिये उसने कछुए से कहा — "देखो, वहॉ उस झरने पर पानी है तुम वहॉ जा कर अपने हाथ पैर धो आओ तब तक मैं तुम्हारा खाना लगाता हूँ। तुम इस सड़क पर चले जाओ तो तुम उस झरने पर पहुँच जाओगे।"

कछुए ने कैलेबाश[4] का एक कटोरा लिया, घूमा और मकड़े की बतायी सड़क पर जितनी जल्दी से जल्दी चल सकता था झरने की तरफ चल दिया।

झरने पर पहुँच कर उसने वह कटोरा पानी में डुबोया और उसमें पानी में भर कर अपने हाथ पैर धोये और फिर उसी रास्ते से वापस मकड़े के घर चला।

[4] Calabash is the dried outer skin of a pumpkin like vegetable. It may be used to keep dry and wet things and looks like clay pitcher of India. It comes in many sizes and shapes. See its bowl picture above.

पर मकड़े के घर आने तक का वह रास्ता बहुत धूल भरा था। जब तक वह अपने पैर धो कर घर वापस आया उसके पैरों में फिर से धूल लग गयी थी।

मकड़े ने तब तक खाना बना लिया था और सजा कर रखा हुआ था। खाना गरम था और उसमें निकलती भाप की खुशबू से कछुए के मुँह में पानी आ रहा था।

कछुए ने सुबह सूरज निकलने से अब तक कुछ भी नहीं खाया था सो उसको बहुत ही भूख लगी थी।

जब कछुआ पैर धो कर मकड़े के घर में घुसा तो मकड़े ने उसके पैरों की तरफ देखा तो उसको अच्छा नहीं लगा। उसने देखा कि कछुए के पैर तो बहुत ही गन्दे हो रहे हैं।

मकड़ा बोला — "अरे तुम्हारे पैर तो बहुत गन्दे हो रहे हैं। क्या तुमको ऐसा नहीं लगता कि खाना खाने से पहले तुम्हें इन्हें धो लेना चाहिये?"

कछुए ने अपने पैरों की तरफ देखा तो उसको तो बहुत ही शरम आयी। वे तो सचमुच में ही बहुत गन्दे थे। वह फिर घूमा और जितनी जल्दी झरने पर जा सकता था दौड़ गया।

उसने फिर कैलेबाश के कटोरे में पानी भर कर अपने आपको साफ किया और अपने पैर धोये और फिर जितनी जल्दी घर वापस आ सकता था घर लौट कर आया।

पर कछुआ तो कितनी भी जल्दी चले उसको कहीं भी आने जाने में समय लगता है। इस बार जब वह घर लौटा तो उसने देखा कि मकड़े ने तो खाना भी शुरू कर दिया था।

मकड़ा बोला — "कितना स्वादिष्ट बना है खाना।" उसने फिर से कछुए के पैरों की तरफ देखा तो वे तो अभी तक गन्दे थे।

उसने फिर कहा — "क्या तुम ठीक से अपने पैर धो कर नहीं आ रहे?"

कछुए ने फिर से अपने पैरों की तरफ देखा तो वे तो अभी तक गन्दे थे। कछुआ बोला — "पर मैंने इनको साफ किया था। मैंने इनको दो बार धोया पर यह तो तुम्हारी गन्दी धूल भरी सड़क है जो मेरे पैरों को बार बार गन्दा कर देती है।"

मकड़ा बोला — "तो इसका मतलब यह है कि तुम मेरे घर को गाली दे रहे हो?" कह कर उसने एक बड़ा सा कौर मुँह में डाला और उसे चबाने लगा।

कछुआ बहुत दुखी दिखायी दे रहा था क्योंकि एक तो वह बहुत भूखा था और दूसरे मकड़े की सड़क की धूल उसके पैरों को बार बार गन्दा कर देती थी जिससे वह खाना नहीं खा पा रहा था। और उस धूल से बचने की उसको कोई तरकीब भी नजर आ रही थी।

कछुआ खाने की खुशबू लेते हुए बोला — "नहीं नहीं मकड़े भाई, मैं तुम्हारे घर को गाली नहीं दे रहा मैं तो बस तुमको बता रहा था।"

मकड़ा बोला — "ठीक है अब तुम भाग कर जाओ और जल्दी से अपने पैर धो कर वापस आओ ताकि हम दोनों साथ साथ खाना खा सकें।"

कछुए ने देखा कि आधा खाना तो खत्म ही हो चुका था और मकड़ा जितनी तेजी से खा सकता था उतनी तेज़ी से खाता ही जा रहा था।

कछुआ एक बार फिर जल्दी से उस झरने पर गया, वहाँ जा कर उसने अपने कटोरे में पानी भरा और अपने पैरों पर छिड़का और वापस घर की तरफ चल दिया।

पर इस बार वह उस धूल भरी सड़क से वापस नहीं आया बल्कि वह घास पर चल कर झाड़ियों से हो कर आया। इससे उसको थोड़ी ज्यादा देर तो लगी पर इस बार उसके पैर गन्दे नहीं हुए।

पर जब वह घर पहुँचा तो उसने देखा मकड़े का खाना तो खत्म हो चुका है और मकड़ा अपने होठ चाट रहा है।

मकड़ा बोला — "ओह आज का खाना कितना बढ़िया था।"

कछुए ने प्लेट में झॉक कर देखा तो वह तो खाली पड़ी थी। खाना तो खाना यहॉ तक कि उसमें से खाने की खुशबू तक जा चुकी थी।

कछुए को बहुत भूख लगी थी पर वह कुछ बोला नहीं। बाद में मुस्कुरा कर बोला — "हॉ खाना तो बहुत ही अच्छा था। तुम लोग अपने गॉव में यात्रियों के साथ बहुत अच्छा बरताव करते हो। अगर तुम कभी मेरे देश में आओ तो वहॉ तुम्हारा बहुत अच्छा स्वागत होगा।"

मकड़ा बोला — "ओह यह तो कुछ भी नहीं है। कुछ भी नहीं।"

कछुआ चला गया। उसने मकड़े के घर में जो कुछ भी हुआ था वह किसी से भी नहीं कहा। वह इस सबके बारे में बिल्कुल चुप ही रहा।

फिर कई महीने बाद की बात है कि एक दिन मकड़ा चलते चलते अपने घर से बहुत दूर निकल गया। उसने देखा कि वह तो उसी कछुए के देश में पहुॅच गया था जो एक बार उसके घर आया था। वह कछुआ एक झील के किनारे पर बैठा हुआ धूप खा रहा था।

कछुआ उसको देखते ही बोला — "अरे दोस्त मकड़े, तुम यहॉ कैसे? तुम तो अपने गॉव से बहुत दूर आ गये हो। क्या तुम मेरे साथ खाना खाना पसन्द करोगे?"

मकड़ा उस समय बहुत भूखा था बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। ऐसा तो होना ही चाहिये। जब कोई आदमी अपने घर से बहुत दूर हो तो उसके साथ दूसरों को दया का बरताव करना ही चाहिये।"

कछुआ बोला — "अच्छा, तुम ज़रा यहॉ ऊपर ठहरो। मैं तुम्हारे लिये नीचे खाना बनाने जाता हूँ।" कह कर कछुआ पानी में डुबकी मार कर झील की तली में पहुँच गया। वहॉ जा कर वह खाना बनाने लगा।

मकड़ा झील के किनारे बैठा बड़ी बेसब्री से कछुए के खाना लाने का इन्तजार करता रहा।

खाना बना कर कछुआ पानी के ऊपर आया और मकड़े से बोला — "ठीक है। सब कुछ तैयार हो गया। चलो अब नीचे चलो खाना खाते हैं।" कह कर उसने अपना सिर पानी में नीचे किया और झील में नीचे तैर गया।

मकड़ा तो बहुत भूखा था ही सो वह भी कछुए के पीछे पीछे पानी में कूद गया। पर मकड़ा तो बहुत हल्का था। वह पानी में नीचे नहीं जा सका वह पानी के ऊपर ही तैरने लगा।

उसने पानी में बहुत हाथ पैर मारे पर वह तो वहीं पानी के ऊपर ही रहा। किसी तरह भी वह उसके साथ नीचे नहीं जा सका।

वह काफी देर तक पानी में नीचे जाने के लिये कोशिश करता रहा जहॉ कछुआ खाना खा रहा था पर उसकी हर कोशिश बेकार रही वह किसी भी तरह वहॉ नहीं पहुँच सका।

कुछ देर बाद कछुआ अपने होठ चाटता हुआ ऊपर आया और मकड़े से पूछा — "अरे क्या हुआ तुमको? तुम नीचे नहीं आये? क्या तुमको भूख नहीं लगी? खाना तो बहुत अच्छा है। आओ ज़रा जल्दी करो।" और यह कह कर वह तो फिर पानी में डुबकी मार गया।

मकड़े ने उस झील की तली में पहुँचने के लिये एक बार फिर से अपनी पूरी कोशिश की पर वह वहाँ तक न पहुँच सका। वह तो पानी के ऊपर ही तैरता रहा।

फिर उसने कुछ सोचा तो वह किनारे पर वापस गया, पत्थर के कुछ टुकड़े उठाये और उनको अपनी जैकेट की जेब में रख लिया। उसने अपनी जेबों में इतने सारे पत्थर के टुकड़े रखे कि वह अब काफी भारी हो गया।

उन पत्थरों को अपनी जेबों में रख कर वह इतना भारी हो गया कि वह चल भी नहीं पा रहा था। उसके बाद वह पानी में कूद पड़ा और इस बार तो वह अपने भारीपन की वजह से पानी में नीचे डूबता ही चला गया।

अब वह वहाँ पहुँच गया जहाँ कछुआ खाना खा रहा था। मकड़ा बहुत भूखा था। वहाँ पहुँच कर उसने देखा कि आधा खाना तो जा चुका था।

जैसे ही वह खाने के पास पहुँचा तो कछुए ने नम्रता से कहा — "माफ करना मेरे दोस्त, मेरे देश में लोग जैकेट पहन कर खाना नहीं

खाते इसलिये तुम अपनी जैकेट उतार दो ताकि फिर हम ठीक से खाना खा सकें।"

कह कर कछुए ने एक बहुत बड़ा सा खाने का कौर मुँह में डाला और उसको चबाने लगा। मकड़े ने सोचा कि अगर यह इसी तरह खाता रहा तो कुछ मिनटों में वहाँ कोई खाना नहीं बचेगा।

मकड़े का सारा शरीर भूख से दर्द कर रहा था। इतने में कछुए ने दूसरा बड़ा सा खाने का कौर मुँह में डाला और उसको चबाने लगा।

यह देख कर मकड़े ने अपनी जैकेट उतारी और खाने को लेने के लिये दौड़ा पर बिना पत्थर के टुकड़ों के तो वह फिर से इतना हल्का हो गया था कि वह तुरन्त ही पानी के ऊपर पहुँच गया।

लोगों का कहना है कि "एक अच्छा खाना दूसरा अच्छा खाना देता है।" पहले मकड़े ने कछुए को खाना ठीक से नहीं खिलाया था इसी लिये मकड़े को भी कछुए के घर में खाना नहीं मिला।

3 तुमने बुलाया है[5]

आओ खाना खाने आओ की इन लोक कथाओं के संग्रह की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये अफ्रीका महाद्वीप के नाइजीरिया देश की लोक कथाओं से ली है।

एक कछुआ और एक बबून बहुत अच्छे दोस्त थे और अक्सर ही खाना एक साथ खाया करते थे। उन दिनों जानवरों की दुनियॉ में एक बहुत बड़ा अकाल पड़ा हुआ था और किसी को भी खाना काफी नहीं मिल पा रहा था।

एक दिन बबून ने कछुए के साथ एक मजाक करने की सोची और उसको अपने घर खाने पर बुलाया।

"खट खट खट खट।"

कछुए ने पूछा — "कौन है।"

बबून बोला — "मैं हूँ।"

कछुआ बोला — "यह मैं कौन? क्या तुम्हारा कोई नाम नहीं है?"

बबून बोला — "मैं तुम्हारा दोस्त... ।"

कछुआ ने उसे चिढ़ाया — "अरे कौन सा दोस्त?"

[5] You Asked For It – an Igbo folktale from Nigeria, West Africa. Adapted from the Book : "The Orphan Girl and the Other Stories". Read this book in Hindi translated by Sushma Gupta.

बबून कुछ गुस्से से बोला — "मुझे नहीं लगता तुम्हारा कोई दोस्त है भी। कई दोस्तों को तो छोड़ दो।"

कछुआ हॅसते हुए बोला — "आओ बबून, मैं तो बस यूॅ ही ज़रा सा मजाक कर रहा था।"

बबून ने अन्दर आ कर पूछा — "आज कल तुम इस अकाल के दिनों में कैसे गुजारा कर रहे हो?"

कछुआ बोला — "बहुत ही मुश्किल हो रही है भाई। ऐसा लग रहा है कि बस मैं तो मर ही जाऊॅगा। मेरा अनाज का भंडार घर खाली है और अब तो पेड़ की छाल भी मुझे अच्छी लगती है।"

बबून मुस्कुराया जैसे उसने गोरिल्ला के साथ कुश्ती का कोई मुकाबला जीत लिया हो। अन्दर तो वह इतनी ज़ोर से हॅसा कि उसकी थोड़ी सी हॅसी बाहर भी निकल गयी और कछुए ने भी उसे सुन लिया।

बबून उछल उछल कर हॅसा — "हो हो हो हो।" और बोला — "आज तुम्हारी किस्मत बहुत अच्छी है कछुए दोस्त। आज शाम का खाना तुम मेरे साथ खाओ।"

कछुआ खुश हो कर बोला — "ओह बबून, यह तो बड़ी अच्छी बात है।"

बबून आगे बोला — "आज तुम दोपहर का खाना मत खाना ताकि तुम मेरे घर ज़्यादा खाना खा सको। इस तरह से तुम्हारे पास मेरे घर में वह खाना खाने के लिये ज़्यादा जगह रहेगी जो मैं खास

तुम्हारे लिये शाम को बनाने वाला हूँ। यह मेरी एक खास चीज़ है जो मेरे परिवार में बहुत सालों से बनती चली आ रही है।"

यह सुन कर कछुए के मुँह में पानी भर आया और वह बबून के घर का खाना खाने के लिये बेचैन हो उठा।

कछुआ बोला — "अच्छा बबून, मेरे दोस्त, अब तुम मुझको ज़्यादा मत तरसाओ। बस तुम भाग जाओ और अब हम शाम को खाने पर मिलते हैं।"

बबून तुरन्त ही जितनी जल्दी भाग सकता था अपने घर भाग गया और खाना बनाने का सामान जुटाने में लग गया।

इस बीच कछुए भी उसके पीछे पीछे हो लिया। बबून का घर कछुए के घर से क्योंकि थोड़ी दूर पर था तो कछुए ने सोचा कि क्यों न थोड़ा जल्दी ही बबून के घर के लिये रवाना हुआ जाये।

जब वह गरमी में रेंगता जा रहा था तो उसको लगा कि वह वहाँ न जाये और घर वापस चला जाये क्योंकि गरमी बहुत थी पर वह यह याद कर के चलता रहा कि बबून ने उसको खाना खिलाने का वायदा किया था। आखिरकार वह बबून के घर आ पहुँचा।

बबून ने उसको देख कर कहा — "आओ दोस्त।"

कछुए ने पूछा — "धन्यवाद दोस्त। क्या खाना तैयार है?"

बबून बोला — "नहीं, अभी नहीं। आखिरी चीज़ें डालने के लिये बस मैं तुम्हारा ही इन्तजार कर रहा था। इसके अलावा मैं

उसको ठंडा भी नहीं होने देना चाहता था। तुम बैठो बस मैं खाना अभी तैयार कर के लगाता हूँ।"

कछुए ने पूछा — "मैं तुम्हारी कोई सहायता करूँ?"

बबून बोला — "नहीं नहीं, बिल्कुल नहीं। बस तुम आराम करो। आज तुम मेरे मेहमान हो।"

सो कछुआ आराम से बैठ गया और बबून खाना बनाने चला गया। जब कछुआ इन्तजार कर रहा था तो उसको खाने की बहुत ही अच्छी खुशबू आ रही थी।

उसने सोचा "क्या यह मुर्गी का रसा है या फिर मक्का की रोटी? कितना समय हो गया ये सब चीज़ें खाये हुए।"

कुछ देर बाद बबून आया और बोला — "आओ दोस्त खाना तैयार है।"

"अरे वाह। चलो। मैं तो इस लम्बे रास्ते से आते आते थक गया हूँ। तुम मेरे घर से काफी दूरी पर रहते हो। या पता नहीं गरमी और भूख दोनों ने ही शायद इस रास्ते को कुछ ज़रा ज़्यादा ही लम्बा बना दिया था।"

"कोई बात नहीं, तुम चिन्ता मत करो और खाना खाओ। देखो वह ऊपर रखा है खाना। चढ़ो और ले लो।" इतना कह कर बबून ने पेड़ के ऊपर की तरफ इशारा किया जहाँ उसने खाना लगाया हुआ था।

कछुआ सोच रहा था कि वह ऊपर कैसे चढ़े। बबून तो पहले ही वहॉ चढ़ चुका था और उसने खाना खाना शुरू भी कर दिया था।

कछुआ नीचे से ही बोला — "दोस्त, तुम थोड़ा सा खाना मेरे लिये ऊपर से ही फेंक दो। मैं इतनी ऊपर नहीं चढ़ सकता।"

"नहीं, मैं यह तो सह सकता हूँ कि तुम मेरे साथ खाना न खाओ पर मैं इतना अच्छा खाना नीचे फेंक कर बरबाद नहीं कर सकता।"

कछुआ बोला — "मैं उतना ऊपर चढ़ नहीं सकता तुमको तो मालूम है।"

"बड़े शरम की बात है कि तुम यहॉ खाना खाने नहीं आ सकते। खाना तो यहीं इसी पेड़ की शाख पर रखा है। यही मेरी खाने की मेज है। अगर तुमको खाना खाना है तो आओ और ले लो।"

कछुए ने सोचा यह तो बड़ी बेरहमी और बेशरमी की बात है। फिर भी उसने उस पेड़ पर चढ़ने की कोशिश की पर जब तक वह वहॉ पहुँचा तब तक बबून ने वह सारा खाना खत्म कर लिया था।

जब बबून ने खाना खा लिया तो कछुए ने अपनी छड़ी उठायी और बड़े दर्द के साथ वापस अपने घर की तरफ चल दिया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह गरमी थी या भूख थी या फिर बबून का धोखा था जो उसको परेशान कर रहा था।

वह जब तक अपने घर पहुँचा तब तक उसे बहुत ज़ोर की प्यास लग आयी थी और उसके पैर गरम रेत से जल रहे थे। वह घर आ कर ठंडा पानी पी कर लेट गया और बबून से इसका बदला लेने के बारे में बहुत देर तक सोचता रहा।

कई बाजार हफ्ते[6] बाद बबून को कछुए के घर खाना खाने के लिये बुलावा आया। पहले तो उसने सोचा कि शायद कछुआ उससे उस दिन का बदला लेने की सोच रहा हो पर फिर उसने सोचा कि कछुए ने उस दिन की घटना को मजाक में ही लिया होगा ऐसा नहीं हो सकता।

इसके अलावा कछुए के पास तो कोई ऐसी जगह ही नहीं है जहाँ वह खाना रख सके और मैं वहाँ न पहुँच सकूँ। सो उसने सोचा कि वह उसका बुलावा मान लेगा।

कछुए का घर बहुत दूर था। बबून ने भी कछुए की तरह अपनी यात्रा उस खाने के स्वाद से ही शुरू की जो उसके मेजबान कछुए ने उसको खिलाने का वायदा किया था।

गरमी वाकई बहुत थी। यह उस दिन से भी कहीं ज़्यादा थी जब उसने कछुए को खाने के लिये बुलाया था क्योंकि अब जंगलों में आग भी लगनी शुरू हो गयी थी।

[6] In many African villages markets are still organized on weekly basis that is why it is called market week.

काफी घास फूस और झाड़ियॉ सूख चुकी थीं और आग की वजह से सारी जमीन काली हो रही थी।

उसके और कछुए के घर के बीच में एक झील पड़ती थी और झील के बाद एक मैदान था जो झाड़ियों को जला देने की वजह से सारा काला हो गया था।

बबून ने उस झील को बिना किसी मुश्किल के पार कर लिया। जब वह कछुए के घर पहुँचा तो उसने आराम की सॉस ली कि आखिर वह कछुए के घर आ ही गया था।

उसने देखा कि कछुआ एक बरतन में कुछ चला रहा था। उसे लगा कि वह दलिया रहा होगा। वहॉ पहुँच कर वह कछुए से बोला — "लगता है कि तुम तो बहुत ही अच्छे रसोइये हो।"

कछुए ने उसको घर के अन्दर लाते हुए कहा — "आओ बबून भाई, मुझे लग रहा है कि तुमको यहॉ समय पर आने में कोई मुश्किल नहीं हुई। मुझे बहुत खुशी है कि तुम आ गये। आओ बैठो। मैं अभी खाना लगाता हूँ।"

कछुए ने बरतन में से खाना निकाला और पेड़ के एक कटे हुए तने पर सजा कर लगा दिया। बबून उस पेड़ के तने के पास बैठ गया।

वह खाना खाना शुरू करने ही वाला था कि कछुए ने उसके हाथ देखे तो वह चिल्लाया — "रुक जाओ बबून रुक जाओ। क्या तुमको खाने का ढंग भी नहीं आता? तुम्हारे हाथ तो उतने ही काले

है जितना कि कोई पकाने वाला बरतन। मेरा तो दो साल का बच्चा भी यह जानता है कि खाना कैसे खाना चाहिये।"

यह सुन कर बबून ने खाने से तुरन्त ही अपने हाथ खींच लिये और उनकी तरफ देखा। उसको भी लगा कि वे तो बहुत गन्दे थे।

वह बोला — "मुझे लगता है कि ये मेरे हाथ गन्दे तब हो गये जब मैं वह मैदान पार कर के यहाँ आ रहा था।"

"यकीनन तभी ये गन्दे हुए होंगे। अब तुम झील पर जाओ और अपने हाथ धो कर आओ तब तक मैं खाने के लिये तुम्हारा इन्तजार करता हूँ।"

बबून भागा भागा उस काले मैदान में से हो कर झील पर गया, अपने हाथ धोये और वापस लौटा। पर जब वह वापस लौट रहा था तब भी उसको वही काला मैदान पार कर के आना था।

सो जब तक वह कछुए के पास आया उसके हाथ फिर से काले हो गये थे। अबकी बार उसके हाथ पहले से भी ज़्यादा काले थे क्योंकि वे गीले थे।

कछुआ ने उसको चिढ़ाया — "दोस्त तुम्हारे हाथ तो पहले से भी ज़्यादा गन्दे हैं। क्या बात है? ऐसा लगता है कि यह कालिख तुम्हें बहुत भा गयी है। तुम कालिख से कुश्ती लड़े थे या फिर उसमें तैरे थे?

जाओ फिर से जाओ और साफ हो कर आओ। और अच्छा हो अगर तुम जल्दी से आ जाओ क्योंकि नहीं तो मेरा यह खाना बस अब खत्म होने ही वाला है।"

सो बबून अपने हाथ धोने के लिये फिर से झील की तरफ भागा। उसको भूख भी बहुत लग रही थी। पर जब भी उसने कछुए के घर तक पहुँचने के लिये वह काला मैदान पार किया उसके हाथ उस मैदान की कालिख से काले हो गये।

इस बीच कछुआ अपने घर में दावत खा रहा था और खाना भी अब करीब करीब खत्म होने पर आ रहा था।

जब तक बबून तीसरी बार कछुए के घर आया खाना खत्म हो गया था पर हाथ उसके अभी भी काले ही थे। अब उसकी समझ में आ गया कि यह मजाक कछुए ने उससे बदला लेने के लिये किया था।

गुस्से से भरा भूखा बबून कछुए को गालियॉ देता हुआ अपने घर लौट आया।

कछुए ने अपना खाना खत्म किया, धूप में लेटा और इस तरह से बबून से अपना बदला लिया।

"दोस्त, न तो तुमको खिलाड़ी वाला खेल खेलना चाहिये और न ही कभी चीते को उसकी पूँछ से पकड़ना चाहिये। तुम्हारी बड़ी हिम्मत है।"

ज़िन्दगी भर मैंने उन लोगों को धोखा दिया है जो जिन्दगी भर वापस मुझे धोखा देने का प्लान बनाते रहे हैं। और तुमने मुझे पहले ही धोखा दे दिया, तुम क्या अपने आपको कुछ ज़्यादा ही होशियार समझते हो?"

4 कछुआ और बबून[7]

आओ खाना खाने आओ की यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के नाइजीरिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है। यह कहानी इससे पहले वाली कहानी जैसी है।

एक शाम को कछुआ अपनी धीमी चाल से अपने घर की तरफ चला जा रहा था कि रास्ते में उसको बबून मिला।

बबून ने कछुए से पूछा — "क्या बात है कछुए भाई, आज तुम कुछ उदास लग रहे हो। आज तुमको खाना ठीक से नहीं मिला क्या?"

कछुआ बोला — "नहीं भाई, आज तो बहुत थोड़ा ही खाना मिल पाया।"

बबून के दिमाग में एक विचार उठा और वह हॅस हॅस कर नाचने लगा, फिर बोला — "कछुए भाई, चलो तुम मेरे साथ मेरे घर चलो। मेरे घर में तुम्हारे लिए खाना बिल्कुल तैयार है।"

कछुए ने कहा — "धन्यवाद भाई।" और वह बबून के पीछे पीछे उसके घर की तरफ जाने वाले रास्ते पर चल दिया।

[7] Tortoise and Baboon – a folktale from Nigeria, West Africa

अब कछुआ बेचारा जितनी तेज़ी से चल सकता था चल रहा था परन्तु फिर भी उसकी चाल बबून की चाल से तो धीमी ही थी, खास कर के जब जबकि उसको पहाड़ी पर चढ़ना होता था।

एक दो बार रुक कर वह थोड़ा सा सुस्ताया भी परन्तु कब तक, जमीन बहुत पथरीली थी इसलिये भी उसको चलने में बहुत परेशानी हो रही थी। पर मरता क्या न करता शानदार खाने के लालच में वह चलता ही रहा।

आखिरकार वह उन झाड़ियों के पास तक पहुँच गया जिनको बबून अपना घर कहता था।

बबून तो कछुए से बहुत पहले ही पहुँच गया था। वह वहाँ पहुँच कर उछल कूद कर रहा था। जैसे ही उसने कछुए को देखा तो बोला — "भगवान मेरी पूँछ बनाए रखे तुमने यहाँ आने में कितनी देर कर दी कछुए भाई। यह तो अगला दिन हो गया।"

लम्बी यात्रा की हॅपहॅपी के बाद कछुआ बोला — "मुझे इस देर का बहुत दुख है भाई परन्तु अब तक तो खाना तैयार करने के लिए तुमको काफी समय मिल गया होगा इसलिये अब तुम नाराज न हो कर मुझे खाना खिला दो तो बड़ा अच्छा हो। मुझे बहुत भूख लगी है।"

बबून हाथ मलते हुए बोला — "हाँ वह तो तुम ठीक कहते हो। खाना बिलकुल तैयार है। आओ इस पेड़ पर चढ़ जाओ। यहाँ बाजरे की शराब के तीन घड़े मैंने तुम्हारे लिये ही रखे हैं।"

कछुए ने ऊपर की ओर देखा तो देख कर तुरन्त ही समझ गया कि वह इतना ऊँचा कभी नहीं चढ़ पायेगा। उधर बबून भी यह बात अच्छी तरह जानता था कि कछुआ वहाँ तक कभी भी नहीं चढ़ पायेगा।

कछुआ गिड़गिड़ाते हुए बोला — "बबून भाई, तुम ही मेरे लिए एक घड़ा नीचे उतार दो न। मैं बहुत थक गया हूँ।"

परन्तु बबून एक पल में ही ऊपर चढ़ गया और ज़ोर ज़ोर से बोला — "जिसको मेरे साथ खाना खाना है तो उसे पेड़ पर तो चढ़ना ही पड़ेगा।"

यह सुन कर बेचारा कछुआ भूखे पेट ही अपने घर की तरफ चल दिया। वह अपने आपको कोस रहा था कि वह पेड़ पर क्यों नहीं चढ़ सकता। मगर चलते चलते इस बेरहम बबून से इसका बदला लेने के लिए उसके दिमाग में एक तरकीब आयी।

कुछ दिनों बाद कछुए ने बबून को अपने घर खाना खाने का न्यौता दिया। बबून को पहले तो बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह कछुआ तो इतना कंजूस है यह मुझे दावत कैसे दे रहा है।

फिर उसने सोचा कि कछुआ तो बहुत ही धीमा और भला आदमी है उसके मन में मेरे लिए कोई बुराई नहीं हो सकती इसलिये मुझे उसके घर खाना खाने जाने में कोई हर्जा नहीं है। यह सोच कर वह तय किये गये समय पर कछुए के घर की तरफ चल दिया।

उस समय सूखे का मौसम था और लोगों ने अपने खेतों के सूखे पत्ते, डंडियॉ और घास आदि को आग लगा कर जला दिया था। और जब आग लगती है तो जमीन तो काली हो ही जाती है।

नदी के उस पार ऐसी ही जली हुई काली जमीन का एक बड़ा सा मैदान था जिसे पार कर के कछुए का घर था और वहीं बबून को कछुए के घर खाना खाने जाना था।

कछुए के पास सोंधी सोंधी खुशबू वाले खाने का बरतन भरा रखा था। कछुए ने जब बबून को आते देखा तो बोला — "आओ बबून भाई आओ, तुमको अपने घर में देख कर आज मुझे बहुत खुशी हुई। आओ खाना खायें बहुत भूख लगी है।"

दोनों खाना खाने बैठे तो कछुए ने देखा कि बबून के तो दोनों हाथ काले हैं।

कछुआ बोला — "अरे बबून भाई, तुम्हारे तो दोनों हाथ काले हैं। क्या तुम्हारी मॉ ने तुम्हें यह नहीं सिखाया कि खाना खाने से पहले हाथ धो लेने चाहिए?

देखो तो तुम्हारे हाथ कितने गन्दे हैं। सारी कालिख उन पर लगी है। जाओ पहले हाथ धो आओ फिर खाना खायेंगे। और हॉ ज़रा जल्दी आना मुझे बहुत भूख लगी है।"

बबून ने अपने हाथ देखे तो वे तो सचमुच ही बहुत काले थे और वे इतना बड़ा काला मैदान पार करने के बाद तो बिल्कुल ही काले हो गए थे।

बबून भागा भागा गया और नदी से नहा कर लौटा तो उसे फिर से उसी काले मैदान को पार करना पड़ा इसलिये उसके हाथ फिर से काले हो गए थे।

कछुआ बोला — "यह नहीं चलेगा बबून भाई, यदि मेरे साथ खाना खाना है तो सफाई से ही खाना खाना होगा और हॉ जल्दी करो खाने का समय निकला जा रहा है मैंने तो अपना खाना खाना शुरू भी कर दिया है।"

बेचारा बबून बार बार नदी में नहा कर आता मगर कछुए के घर तक आते आते उस काले मैदान की वजह से उसके हाथ बार बार गन्दे हो जाते। और कछुए ने उसे गन्दे हाथों से खाना खाने से मना कर दिया था।

आखिर खाना खत्म हो गया। अब बबून को लगा कि उसको तो छला गया है इसलिये अब की बार जब वह हाथ धोने के लिए नदी पर गया तो वापस ही नहीं आया।

वह सीधा अपने घर भाग गया। और कछुआ भी इधर खाना खा कर अपने हाथ पैर सिकोड़ कर अपने खोल में सो गया। इस तरह से कछुए ने बबून से अपने अपमान का बदला लिया।

5 टिड्डा और मेंढक[8]

एक बार नाइजीरिया के एक गॉव के पास एक टिड्डा और मेंढक रहते थे। उनमें आपस में बड़ी अच्छी दोस्ती थी। लोग उनको अक्सर साथ साथ देखते थे। पर उनकी यह दोस्ती बाहर तक ही थी वे कभी भी एक दूसरे के घर नहीं गये थे।

एक दिन मेंढक ने टिड्डे से कहा — "दोस्त, आज तुम मेरे घर खाना खाने खाओ। मैं और मेरी पत्नी आज तुम्हारे लिये खास खाना बनायेंगे और हम सब मिल कर फिर साथ साथ खायेंगे।"

टिड्डा खुशी खुशी राजी हो गया और शाम को टिड्डे के घर जा पहुँचा। खाना खाने से पहले मेंढक ने अपने आगे वाले पैर धोये और टिड्डे को भी कहा कि वह भी अपने आगे वाले पैर धो ले। टिड्डे ने भी अपने पैर धोये और खाना खाने आ गया।

पर जब उसने खाना खाना शुरू किया तो वह अपने आगे के पैर मलने लगा जिससे "चिर्प चिर्प" की आवाज होने लगी।

मेंढक बोला — "भाई टिड्डे, क्या तुम अपना यह चिल्लाना बन्द नहीं कर सकते? मैं इतनी आवाज में खाना नहीं खा सकता।"

[8] Grasshopper and the Toad – a folktale from Nigeria, Africa. Adapted from the Web Site : http://www.timbooktu.com/olufemi/grasshop.htm Retold by Baba Olutunde Olufemi

टिड्डे ने बिना अपने आगे की टॉगों को मलते हुए खाना खाने की बहुत कोशिश की पर यह उसके लिये नामुमकिन सा था। वह उनको बिना मले खाना खा ही नहीं सकता था।

हर बार जब भी वह अपना कौर उठा कर खाता तो वह अपनी टॉगें मलता और उस मलने से आवाज होती। और जैसे ही उसकी आवाज होती "चिर्प" तो मेंढक शिकायत करता कि वह खाना नहीं खा पा रहा है इसलिये टिड्डे को शान्ति से खाना खाना चाहिये।

टिड्डा इस बात से गुस्सा हो गया और खाना नहीं खा सका। आखीर में उसने मेंढक से कहा — "मेंढक भाई, कल तुम मेरे घर शाम को खाना खाने आना।"

मेंढक बोला ठीक है। सो अगले दिन शाम को मेंढक टिड्डे के घर खाना खाने पहुँचा। जैसे ही टिड्डे का खाना तैयार हो गया उसने अपनी आगे वाली टॉगें धोयीं और मेंढक को भी अपनी टॉगें धोने के लिये बुलाया।

मेंढक ने भी अपनी आगे वाली टॉगें धोयीं और तुरन्त ही कूद कर खाना खाने पहुँच गया।

टिड्डा बोला — "मेंढक भाई, तुम्हारे हाथ तो गन्दे हैं अच्छा हो तुम इनको दोबारा धो कर आओ। लगता है कि तुम धूल मिट्टी में कूद कर आये हो इसी लिये तुम्हारे हाथ इतने गन्दे हो गये हैं।"

मेंढक फिर से पानी के लोटे के पास कूद कर गया, अपने आगे के पैर फिर से धोये और फिर से खाने की मेज पर कूद कर आ

गया। वह मेंढक की सजायी हुई प्लेटों में से एक प्लेट में से खाना लेने ही वाला था कि मेंढक ने उसे फिर रोक दिया।

"मेहरबानी कर के अपने गन्दे पैर मेरी खाने की प्लेट में डाल कर मेरा खाना गन्दा मत करो। खाना खाना है तो अपने हाथ ठीक से साफ कर के आओ।"

मेंढक बहुत गुस्सा था, वह चिल्लाया — "तुम मुझे बस अपने साथ खाना खाने देना नहीं चाहते। तुमको मालूम है कि मुझे अपने आगे वाले पैर और पंजे इधर उधर जाने में इस्तेमाल करने ही होते हैं। सो अगर वे पानी के लोटे और खाने की मेज के बीच आने जाने में थोड़े बहुत गन्दे हो भी जाते हैं तो मैं उसमें कुछ नहीं कर सकता।"

टिड्डा बोला — "पर यह सब तो तुमने ही कल से शुरू किया। तुमको भी तो मालूम है कि मैं अपने आगे की टाँगें बिना आवाज किये नहीं मल सकता और उनको बिना मले मैं खाना भी नहीं खा सकता।"

पर मेंढक उसको गन्दे हाथों से खाना खिलाने के लिये तैयार नहीं था सो टिड्डा अपने घर चला गया। उस दिन के बाद उन दोनों की दोस्ती टूट गयी और फिर किसी ने कभी उनको साथ साथ नहीं देखा।

इस कहानी से हमको यह सीख मिलती है कि अगर हमको किसी से दोस्ती बना कर रखनी है तो हमको उसकी अच्छाइयों के

साथ साथ उसकी कमजोरियों को भी अपनाना चाहिये वरना हम उसको खो देते हैं।

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022